

NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 13-05-2026

विषय सूची

परिवर्तित विश्व व्यवस्था: भारत की कूटनीति को मार्गदर्शित करने वाले पाँच सिद्धांत
आईएमडी द्वारा ब्लॉक-स्तरीय मानसून पूर्वानुमान प्रणाली का शुभारंभ
भूराजनीतिक आघातों के बीच कृषि-खाद्य निगमों के लिए अप्रत्याशित लाभ
भारत में ग्रामीण विकास
भारत की स्वर्ण आयात समस्या एवं यूईई संधि

संक्षिप्त समाचार

सरदार वल्लभभाई पटेल

त्वरित न्याय एक 'मानव अधिकार'

PCOS का नया नाम – PMOS

डीआरडीओ द्वारा हैदराबाद में दीर्घकालीन स्क्रेमजेट कम्बस्टर परीक्षण

प्रधानमंत्री स्कूल्स फॉर राइजिंग इंडिया (PM SHRI)

मलेरिया वैक्सीन पर अध्ययन

राष्ट्रीय फ्लोरेस नाइटिंगेल पुरस्कार 2026

परिवर्तित विश्व व्यवस्था: भारत की कूटनीति को मार्गदर्शित करने वाले पाँच सिद्धांत

संदर्भ

- विदेश नीति में, विश्वसनीय साझेदारियों को पोषित करने का कोई विकल्प नहीं है, भले ही नई संभावनाओं की खोज की जा रही हो।

परिचय

- प्रधानमंत्री मोदी का इस सप्ताह यूरोप जाते समय संयुक्त अरब अमीरात में संक्षिप्त ठहराव, संयुक्त राज्य अमेरिका और ईरान के बीच नाजुक युद्धविराम को लेकर बढ़ती अनिश्चितता के बीच हुआ।
- अबू धाबी में उनकी उपस्थिति एक स्थायी कूटनीतिक सिद्धांत को रेखांकित करती है: जब आपके साझेदार को आपकी आवश्यकता हो, तो उसके साथ खड़े रहें।

असाधारण अंतर्राष्ट्रीय उथल-पुथल के दौर में भारत को मार्गदर्शन देने वाले पाँच सिद्धांत

- पारस्परिकता:** संयुक्त अरब अमीरात, भारत के लिए कश्मीर और सीमा-पार आतंकवाद जैसे केंद्रीय महत्व के मुद्दों पर एक निरंतर साझेदार रहा है।
 - प्रधानमंत्री की यात्रा यह संकेत देती है कि भारत भी बढ़ते सुरक्षा खतरों के समय अमीरात के साथ खड़ा है।
- विविधीकरण:** प्रधानमंत्री की यूरोपीय यात्रा यह दर्शाती है कि यूरोप के साथ भारत की भागीदारी कितनी विकसित हो चुकी है।
- शीत युद्ध के दौरान, भारत का यूरोप संबंध प्रायः सोवियत संघ के साथ उसके घनिष्ठ संबंधों से प्रभावित होता था।
- आज यूरोप भारत के लिए निर्यात बाजारों, पूंजी, उन्नत प्रौद्योगिकी और हरित ऊर्जा साझेदारियों की खोज में केंद्रीय है।
- यूरोपीय संघ और यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ के साथ व्यापार समझौतों का निष्कर्ष, यूरोप के प्रति भारत की नई रणनीतिक समझ का प्रतिबिंब है।

- रणनीतिक लचीलापन:** यूरोप के प्रति भारत का दृष्टिकोण उस समय सामने आ रहा है जब महाशक्ति राजनीति की वापसी और अमेरिका, यूरोप, रूस और चीन के बीच संबंधों का तीव्र पुनर्गठन हो रहा है।
- भारत के लिए चुनौती यह है कि वह अपने हितों को सुरक्षित करे, नकारात्मक प्रभावों को सीमित करे और नई संभावनाओं को साधे।
- भारत के लिए बल हमेशा हितों की व्यावहारिक खोज पर रहना चाहिए।
- रणनीतिक विस्तार:** महीने के अंत में होने वाला भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन उस क्षेत्र को उजागर करता है जिसकी भारत के लिए महत्ता आने वाले दशकों में लगातार बढ़ेगी।
- अफ्रीका वैश्विक अर्थव्यवस्था के भविष्य का केंद्र है— इसकी युवा जनसंख्या, विस्तृत बाजार और महत्वपूर्ण खनिजों का समृद्ध भंडार सभी महाशक्तियों का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं।
- महाद्वीप के कुछ हिस्से भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के महत्वपूर्ण मंच के रूप में भी उभर रहे हैं।
- इस संबंध को अब व्यापार, निवेश, संपर्क और सुरक्षा सहयोग पर अधिक रणनीतिक ध्यान देने की आवश्यकता है।
- घरेलू नवीकरण:** भू-राजनीतिक उथल-पुथल, वैश्विक व्यापार के पुनर्गठन और विघटनकारी प्रौद्योगिकियों के उदय के परिणामों का प्रबंधन करने के लिए तीव्र आंतरिक सुधार आवश्यक है।
 - परिवर्तन के प्रति नौकरशाही का प्रतिरोध और यथास्थिति के प्रति राजनीतिक सहजता अभी भी गंभीर बाधाएँ बनी हुई हैं।

निष्कर्ष

- भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विताओं, आर्थिक अनिश्चितताओं, तकनीकी विघटन और बदलते वैश्विक समीकरणों से चिह्नित इस युग में, भारत की विदेश नीति को व्यावहारिक एवं बहुआयामी दृष्टिकोण से निर्देशित होना चाहिए।
- अंततः, विकसित होते अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को आकार देने और उससे लाभ उठाने की भारत की क्षमता न केवल विदेशों में कूटनीतिक पहुँच पर निर्भर करेगी, बल्कि घरेलू आर्थिक एवं संस्थागत रूपांतरण पर भी।

Source: IE

आईएमडी द्वारा ब्लॉक-स्तरीय मानसून पूर्वानुमान प्रणाली का शुभारंभ

संदर्भ

- भारत मौसम विज्ञान विभाग ने एक नई पूर्वानुमान प्रणाली का शुभारंभ किया है, जो 15 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में दक्षिण-पश्चिम मानसून का ब्लॉक-स्तरीय पूर्वानुमान प्रदान करने में सक्षम है।

भारत में मौसम पूर्वानुमान

- वर्तमान में भारत मौसम पूर्वानुमान के लिए उपग्रह डेटा और कंप्यूटर मॉडल पर निर्भर करता है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) INSAT श्रृंखला के उपग्रहों एवं सुपरकंप्यूटरों का उपयोग करता है।
- भारत में मुख्यतः तीन उपग्रह—INSAT-3D, INSAT-3DR और INSAT-3DS—मौसम संबंधी अवलोकनों के लिए प्रयुक्त होते हैं।
- पूर्वानुमानकर्ता बादलों की गति, बादलों की ऊपरी सतह का तापमान और जलवाष्प की मात्रा से संबंधित उपग्रह डेटा का उपयोग करते हैं, जो वर्षा अनुमान, मौसम पूर्वानुमान एवं चक्रवातों की निगरानी में सहायक होता है।

नई पूर्वानुमान प्रणाली के बारे में

- यह नई पूर्वानुमान प्रणाली पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान द्वारा विकसित की गई है।
- यह प्रणाली कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित विश्लेषण, ऐतिहासिक मौसम संबंधी अभिलेख और वैश्विक मौसम मॉडल को संयोजित करती है, जिससे मानसून पूर्वानुमान की सटीकता में सुधार होता है।
- वर्तमान में यह प्रणाली 15 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश के 3,196 ब्लॉकों को कवर करती है।
 - यह प्रणाली मुख्यतः उन क्षेत्रों के लिए बनाई गई है जो मानसून कोर जोन में आते हैं और वर्षा पर अत्यधिक निर्भर हैं।

- यह प्रणाली आगामी चार सप्ताह के लिए संभाव्य पूर्वानुमान प्रदान करती है और केरल में मानसून के आगमन से लेकर देश के विभिन्न हिस्सों तक इसके प्रसार को ट्रैक करती है।

पहल का महत्व

- **कृषि लचीलापन सुदृढ़ करना:** यह पहल किसानों को समय पर और सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाकर कृषि की संवेदनशीलता को कम कर सकती है।
- **सटीक कृषि को बढ़ावा देना:** एआई आधारित मौसम पूर्वानुमान का उपयोग भारत में सटीक कृषि और डेटा-आधारित खेती को प्रोत्साहित करता है।
- **आपदा तैयारी में सुधार:** सटीक स्थानीय मौसम पूर्वानुमान बाढ़, सूखा और चरम मौसम घटनाओं के विरुद्ध तैयारी को बेहतर बना सकते हैं।
- **भारत की मौसम विज्ञान क्षमताओं को आगे बढ़ाना:** यह पहल जलवायु विज्ञान, मौसम मॉडलिंग और एआई-सक्षम पूर्वानुमान प्रणालियों में भारत की बढ़ती क्षमताओं को दर्शाती है।
- **मानसून की स्थानिक विविधता:** भारतीय मानसून एक ही जिले के अंदर भी उल्लेखनीय स्थानिक विविधता प्रदर्शित करता है। कई मामलों में मानसून आधिकारिक रूप से जिले में पहुँच जाता है, जबकि उस जिले के कई गाँव और ब्लॉक शुष्क बने रहते हैं।

मौसम पूर्वानुमान सुधार हेतु सरकारी पहल

- **मिशन मौसम:** इसे भारत के मौसम विभाग की पूर्वानुमान, मॉडलिंग और प्रसार क्षमताओं को उन्नत करने के लिए शुरू किया गया। इसके उद्देश्य हैं:
 - अत्याधुनिक मौसम निगरानी प्रौद्योगिकियों और प्रणालियों का विकास
 - अगली पीढ़ी के राडार और उन्नत उपकरणों वाले उपग्रहों का कार्यान्वयन
 - बेहतर पृथ्वी प्रणाली मॉडल और डेटा-आधारित विधियों (एआई/एमएल का उपयोग) का विकास
- **राष्ट्रीय मानसून मिशन:** 2012 में इसे इस उद्देश्य से शुरू किया गया कि राष्ट्र को वास्तविक समय, बुनियादी स्तर पर डेटा संग्रहण पर आधारित प्रणाली की ओर ले जाया जाए।

- आईएमडी डॉपलर राडार का उपयोग बढ़ा रहा है। 2013 में जहाँ इनकी संख्या 15 थी, वहीं 2026 तक यह बढ़कर 50 हो गई।
- डॉपलर राडार का उपयोग आसपास के क्षेत्रों में वर्षा का पूर्वानुमान लगाने के लिए किया जाता है, जिससे पूर्वानुमान अधिक समयबद्ध और सटीक हो जाते हैं।
- **WINDS नेटवर्क:** कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने मौसम सूचना नेटवर्क और डेटा प्रणाली (WINDS) की शुरुआत की है, जिसके अंतर्गत 200,000 से अधिक ग्राउंड स्टेशन स्थापित किए जाएंगे ताकि दीर्घकालिक, अति-स्थानीय मौसम डेटा उत्पन्न किया जा सके।

पूर्वानुमान प्रणाली से जुड़ी चुनौतियाँ

- **सीमित मौसम अवसंरचना:** भारत के कई क्षेत्रों में पर्याप्त मौसम निगरानी स्टेशन और अवलोकन अवसंरचना का अभाव है, जिससे अति-स्थानीय पूर्वानुमान की सटीकता सीमित होती है।
- **एल नीनो की आशंका:** इस वर्ष मानसून के बाद के चरण में एल नीनो परिस्थितियों के विकसित होने की संभावना है, जो प्रणाली के लिए बड़ी चुनौती हो सकती है। एल नीनो परिस्थितियाँ सामान्यतः भारत में कमजोर दक्षिण-पश्चिम मानसून वर्षा से जुड़ी होती हैं।
- **मानसून की जटिल गतिशीलता:** भारतीय मानसून महासागर-वायुमंडल अंतःक्रियाओं, दाब प्रणालियों, तापमान भिन्नताओं और क्षेत्रीय स्थलाकृति जैसे अनेक कारकों से प्रभावित होता है। सूक्ष्म स्तर पर वर्षा का पूर्वानुमान लगाना इसलिए वैज्ञानिक रूप से चुनौतीपूर्ण बना रहता है।

आगे की राह

- इस प्रणाली का विस्तार सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों तक किया जाना चाहिए ताकि देशव्यापी मौसम पूर्वानुमान क्षमता में सुधार हो सके।
- भारत को स्वचालित मौसम स्टेशनों, डॉपलर राडार और अवलोकन अवसंरचना में अधिक निवेश करना होगा ताकि पूर्वानुमान की सटीकता बढ़ सके।
- मौसम पूर्वानुमानों को मोबाइल-आधारित कृषि परामर्श सेवाओं के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए ताकि किसानों तक अंतिम स्तर तक सूचना पहुँच सके।

- आईएमडी, राज्य सरकारों, कृषि संस्थानों और स्थानीय प्रशासन के बीच प्रभावी समन्वय इस पूर्वानुमान प्रणाली के सफल कार्यान्वयन के लिए आवश्यक होगा।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD)

- आईएमडी, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की एक एजेंसी है।
- यह मौसम संबंधी अवलोकनों, मौसम पूर्वानुमान और भूकंप विज्ञान के लिए प्रमुख एजेंसी है।
- यह विश्व मौसम संगठन (WMO) के छह क्षेत्रीय विशेषीकृत मौसम विज्ञान केंद्रों में से एक है।

Source: TH

भूराजनीतिक आघातों के बीच कृषि-खाद्य निगमों के लिए अप्रत्याशित लाभ

संदर्भ

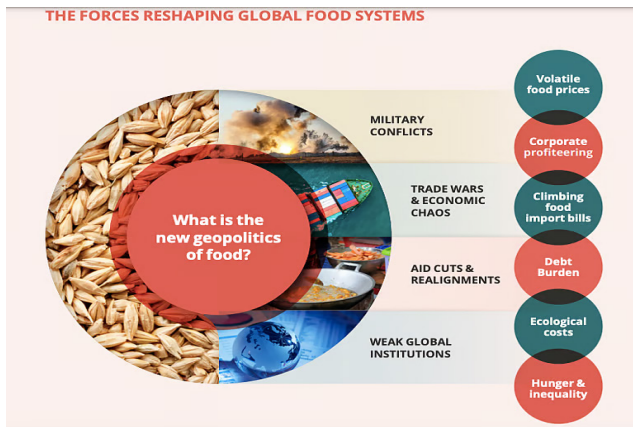
- आईपीईएस-फूड की रिपोर्ट “द न्यू जियोपॉलिटिक्स ऑफ फूड” यह उजागर करती है कि कैसे भू-राजनीतिक व्यवधानों ने बड़े कृषि-खाद्य निगमों को असाधारण लाभ अर्जित करने में सक्षम बनाया है, जबकि विश्वभर में भूख, खाद्य मुद्रास्फीति और पर्यावरणीय क्षरण को और अधिक गंभीर बना दिया है।

रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्ष

- **संकटों का लाभ उठाकर निगमों ने लाभ बढ़ाया:** रिपोर्ट का तर्क है कि कई कृषि-खाद्य निगमों ने वास्तविक उत्पादन लागत से अधिक कीमतें बढ़ाईं।
- 2020 के बाद खाद्य मुद्रास्फीति ने निगमों को लाभ मार्जिन बढ़ाने के अवसर दिए।
- खाद्य बाजारों में सीमित प्रतिस्पर्धा ने प्रमुख कंपनियों को मूल्य निर्धारण की शक्ति प्रदान की।
- **कॉर्पोरेट शक्ति का संकेन्द्रण:** 2008 से अब तक कई विलयों और अधिग्रहणों ने प्रमुख बीज और कृषि-रसायन कंपनियों की संख्या छह से घटाकर चार कर दी है।
- कई कंपनियों ने कथित तौर पर उर्वरक की कीमतें वास्तविक उत्पादन लागत से अधिक बढ़ाईं और अधिक लाभ अर्जित किया।

अत्यधिक कॉर्पोरेट नियंत्रण से जुड़ी चिंताएँ

- **खाद्य संप्रभुता के लिए खतरा:** बहुराष्ट्रीय निगमों पर निर्भरता के कारण देश का अपने घरेलू खाद्य तंत्र पर नियंत्रण समाप्त हो सकता है।
- **मूल्य हेरफेर:** अत्यधिक संकेन्द्रित बाजार संकटों के दौरान अत्यधिक मूल्य निर्धारण और मुनाफाखोरी की संभावना बढ़ाते हैं।
- **छोटे किसानों का कमजोर होना:** बड़ी कंपनियाँ प्रायः आपूर्ति श्रृंखलाओं पर प्रभुत्वशाली रहती हैं, जिससे छोटे उत्पादकों की सौदेबाजी शक्ति सीमित हो जाती है।
- **वैश्विक झटकों के प्रति संवेदनशीलता:** वैश्विक व्यापार पर अत्यधिक निर्भरता देशों को युद्धों, प्रतिबंधों, शिपिंग व्यवधानों और वस्तु मूल्य अस्थिरता के प्रति उजागर करती है।



विकासशील देशों पर प्रभाव

- **खाद्य आयात पर निर्भरता:** 2025 में वैश्विक खाद्य आयात बिल लगभग 2.2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया, जिसमें सबसे तीव्र वृद्धि अल्पविकसित देशों और खाद्य आयातक विकासशील देशों में हुई।
- **खाद्य मुद्रास्फीति:** निम्न-आय वाले देशों ने विकसित देशों की तुलना में अधिक खाद्य मुद्रास्फीति का अनुभव किया क्योंकि गरीब देशों की खाद्य सब्सिडी और मूल्य स्थिरीकरण की वित्तीय क्षमता सीमित है।
- **ग्रामीण गरीबी और असमानता:** छोटे और सीमांत किसान बढ़ती इनपुट लागत, सीमित सौदेबाजी शक्ति एवं अस्थिर आय का सामना करते रहे, जिससे ग्रामीण संकट और असमानता अधिक गंभीर हुई।

- **भारत के लिए महत्व:** भारत में सार्वजनिक खरीद और बफर स्टॉक प्रणाली ने पूर्ववर्ती वैश्विक खाद्य संकटों के दौरान घरेलू खाद्य कीमतों को स्थिर करने में सहायता की।
- भारतीय खाद्य निगम और सार्वजनिक वितरण प्रणाली जैसी संस्थाओं ने सुनिश्चित किया कि खाद्यान्न बड़ी आबादी तक सुलभ रहे।

आगे की राह

- सरकारों को अधिक सार्वजनिक निवेश, बेहतर सिंचाई और भंडारण अवसंरचना, विविधीकृत फसल प्रणाली एवं सुदृढ़ किसान समर्थन तंत्र के माध्यम से घरेलू कृषि को सुदृढ़ करना चाहिए।
- देशों को सार्वजनिक खाद्य भंडार, बफर स्टॉक प्रणाली, विपणन बोर्ड और आपूर्ति प्रबंधन तंत्र को पुनर्जीवित करना चाहिए ताकि वैश्विक संकटों के दौरान खाद्य कीमतों को स्थिर किया जा सके।
- सरकारों को प्रतिस्पर्धा कानूनों और एंटी-मोनोपॉली विनियमों को सुदृढ़ करना चाहिए ताकि कृषि-खाद्य क्षेत्रों में बाजार शक्ति का अत्यधिक संकेन्द्रण रोका जा सके।
- **सतत कृषि** को कृषि-पर्यावरणीय और जलवायु-लचीली खेती प्रथाओं के माध्यम से बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- **वैश्विक खाद्य शासन:** अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को खाद्य सुरक्षा, न्यायसंगत कृषि व्यापार, कमजोर देशों के लिए ऋण राहत और समान वैश्विक खाद्य प्रणालियों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

Source: DTE

भारत में ग्रामीण विकास

संदर्भ

- भारत सरकार और अंतर्राष्ट्रीय कृषि विकास कोष (IFAD) ने 2026–2033 के लिए एक नया आठ-वर्षीय देशीय सामरिक अवसर कार्यक्रम (COSOP) प्रारंभ किया है।

परिचय

- **उद्देश्य:** ग्रामीण आय को सुदृढ़ करना, लचीलापन बढ़ाना और भारत में सतत आजीविका अवसरों का विस्तार करना।

- यह कार्यक्रम दो प्रमुख प्राथमिकताओं पर केंद्रित है: ग्रामीण समुदायों की सामाजिक, आर्थिक और जलवायु लचीलापन को बढ़ाना, तथा ज्ञान प्रणालियों को सुदृढ़ करना ताकि सफल विकास मॉडलों को भारत एवं वैश्विक दक्षिण के अन्य देशों में विस्तारित किया जा सके।
- **मुख्य उद्देश्य:** बुनियादी संस्थाओं को सुदृढ़ करना, जिनमें स्वयं सहायता समूह, किसान उत्पादक संगठन और सहकारी समितियाँ शामिल हैं।
- इन संस्थाओं से वित्त, प्रौद्योगिकी, अवसंरचना और बाजारों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की अपेक्षा है।
- भारत और IFAD लगभग पाँच दशकों से साझेदार हैं, जिसके दौरान विभिन्न राज्यों में 35 ग्रामीण विकास परियोजनाएँ लागू की गई हैं।

अंतर्राष्ट्रीय कृषि विकास कोष (IFAD)

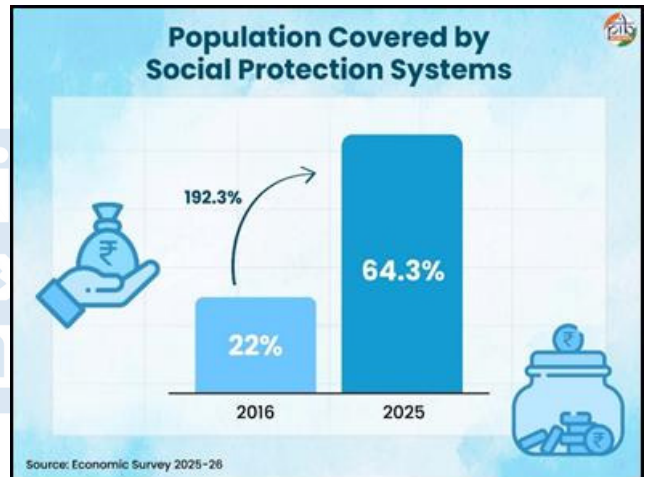
- **स्थापना:** 1977, 1974 के विश्व खाद्य सम्मेलन के बाद।
- **उद्देश्य:** वैश्विक खाद्य संकट और ग्रामीण गरीबी, विशेषकर विकासशील देशों में, का समाधान करना।
- **मुख्यालय:** रोम
- **भारत:** IFAD का संस्थापक सदस्य है।
- **उद्देश्य:**
 - ग्रामीण गरीबी को कम करना।
 - कृषि उत्पादकता को बढ़ाना।
 - खाद्य और पोषण सुरक्षा में सुधार करना।
 - समावेशी ग्रामीण विकास को बढ़ावा देना।
 - छोटे और सीमांत किसानों, महिलाओं और आदिवासी समुदायों का समर्थन करना।

भारत में ग्रामीण विकास

- भारत में विकास का मॉडल धीरे-धीरे केवल सरकार-नियंत्रित दृष्टिकोण से हटकर अधिक समुदाय-आधारित और विकेन्द्रीकृत दृष्टिकोण की ओर अग्रसर हो रहा है।
- स्थानीय सरकारें और बुनियादी संस्थाएँ अब योजना, क्रियान्वयन और निगरानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कारक के रूप में मान्यता प्राप्त कर रही हैं।

प्रमुख विकास:

- ग्रामीण विकास बजट आवंटन 2016-17 के ₹87,765 करोड़ से बढ़कर 2026-27 में ₹2.73 लाख करोड़ हो गया (211% वृद्धि)।
- गरीबी में उल्लेखनीय कमी आई है; 2022-23 में अत्यधिक गरीबी 5.3% रही, जो वैश्विक औसत से कम है, और बहुआयामी गरीबी घटकर 11.28% हो गई।
- महिला-नेतृत्व वाले समूह अंतिम स्तर तक सेवा वितरण का आधार बने हैं, जिनमें 90.09 लाख स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से 10.05 करोड़ महिलाओं को संगठित किया गया है।
- ग्रामीण संपर्क लगभग सार्वभौमिक हो गया है, और प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के लिए बजटीय आवंटन 2017 से 51% बढ़ा है।



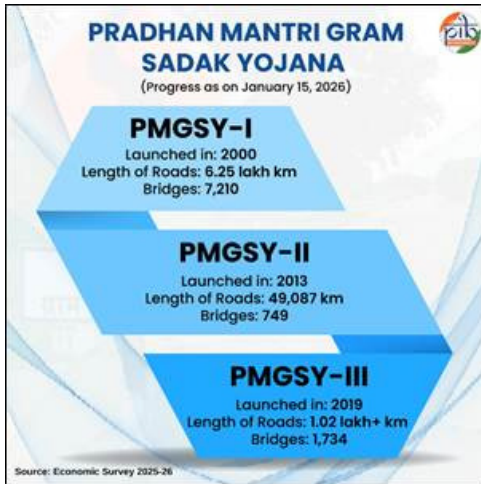
राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस

- भारत प्रत्येक वर्ष 24 अप्रैल को राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस मनाता है, जब संविधान (73वाँ संशोधन) अधिनियम, 1992 लागू हुआ।
- यह दिवस बुनियादी लोकतंत्र के महत्व का उत्सव है, स्थानीय शासन को सुदृढ़ करता है और ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाता है।

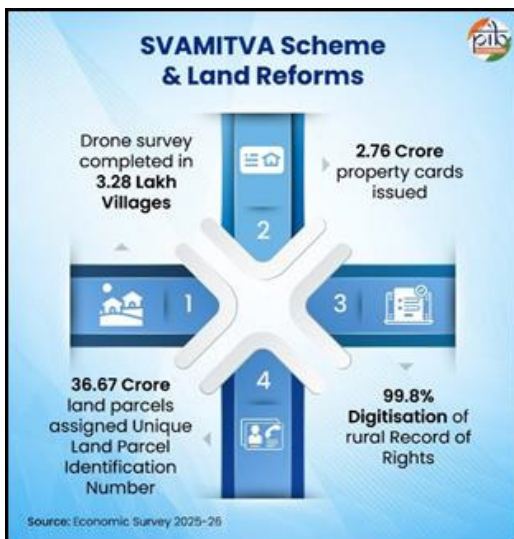
सरकारी पहलें

- **स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण):** 2014 में शुरू किया गया, जिसका उद्देश्य अक्टूबर 2019 तक देशव्यापी खुले में शौच से मुक्त (ODF) स्थिति प्राप्त करना था।
- 2019-20 तक सभी जिलों को ODF घोषित किया गया।

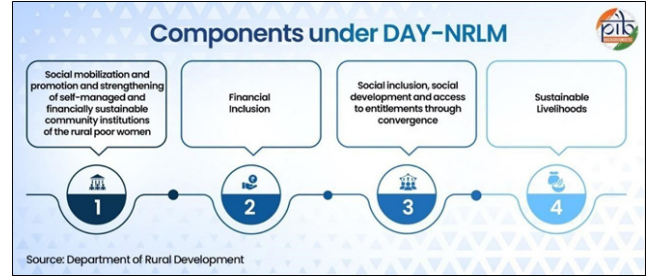
- 31 दिसंबर 2025 तक 96% से अधिक गाँव ODF Plus स्थिति प्राप्त कर चुके हैं।
- **प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य):** 2017 में शुरू की गई, जिसका उद्देश्य ग्रामीण और शहरी गरीब परिवारों को सार्वभौमिक घरेलू विद्युतीकरण प्रदान करना था।
- **प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (PMAY-G):** 2029 तक सभी के लिए आवास का लक्ष्य प्राप्त करने हेतु पात्र ग्रामीण परिवारों को बुनियादी सुविधाओं सहित पक्का मकान प्रदान करना।
- **प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY):** 2000 में शुरू की गई, जिसका उद्देश्य पात्र असंबद्ध बस्तियों को प्रत्येक मौसम में सड़क संपर्क प्रदान करना था।



- **ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटलीकरण और प्रौद्योगिकी-आधारित सेवा वितरण:** ग्रामीण भारत में समावेशी और कुशल सेवा वितरण का एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में डिजिटलीकरण उभरा है।



- **दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM):** 2010 में शुरू किया गया, जिसे 2016 में पुनः नामित किया गया।



- **सामुदायिक संसाधन व्यक्ति (CRPs)** जैसे बैंक सखी, कृषि सखी, पशु सखी और उद्यम प्रोत्साहन CRPs महिलाओं द्वारा संचालित सामुदायिक संस्थाओं के सुचारु संचालन में सहायक हैं।
- **दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना (DDU-GKY):** यह मांग-आधारित कौशल प्रशिक्षण है, जो सुनिश्चित रोजगार से जुड़ा है, और गुणवत्ता व उद्योग प्रासंगिकता को राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) सेक्टर स्किल काउंसिल्स द्वारा अनिवार्य तृतीय-पक्ष प्रमाणन के माध्यम से सुनिश्चित किया जाता है।
- **ग्रामीण भारत में महिलाओं के लिए उद्यमिता मार्ग:** कौशल विकास पहलों को विनिर्माण, नवीकरणीय ऊर्जा, डिजिटल सेवाओं और कृषि-प्रसंस्करण जैसे उभरते क्षेत्रों के साथ संरेखित करना महिलाओं के लिए आर्थिक अवसरों का विस्तार करता है।
 - बैंक टू वर्क और रिटर्नशिप प्रोग्राम्स जैसी पूरक पहलें कार्यबल में पुनः प्रवेश को सुगम बनाती हैं।

निष्कर्ष

- निरंतर सार्वजनिक निवेश ने आवास, ग्रामीण संपर्क, पेयजल, स्वच्छता, डिजिटल सेवाओं और सामाजिक सुरक्षा तक पहुँच का विस्तार किया है।
- इस परिवर्तन का केंद्र स्थानीय संस्थाओं का सशक्तिकरण रहा है, जिनमें पंचायती राज संस्थाएँ, स्वयं सहायता समूह और सामुदायिक कार्यकर्ता शामिल हैं।

- इन सुधारों ने ग्रामीण भारत को केवल विकास हस्तक्षेपों का प्राप्तकर्ता नहीं, बल्कि समावेशी विकास का एक महत्वपूर्ण चालक बना दिया है।

Source: PIB

भारत की स्वर्ण आयात समस्या एवं यूएई संधि

संदर्भ

- हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री ने नागरिकों से आग्रह किया कि वे गैर-आवश्यक स्वर्ण खरीद को स्थगित करें और पेट्रोलियम की खपत को कम करें, ताकि पश्चिम एशिया संकट के तीसरे महीने में प्रवेश करने के साथ भारत के विदेशी मुद्रा भंडार को संरक्षित किया जा सके।

भारत के लिए स्वर्ण आयात क्यों महत्वपूर्ण है?

- भारत विश्व के सबसे बड़े स्वर्ण उपभोक्ताओं में से एक है। किंतु घरेलू उत्पादन नगण्य है, जिसके कारण देश को आयात पर अत्यधिक निर्भर रहना पड़ता है।

बढ़ता स्वर्ण आयात बिल

- वित्त वर्ष 2026 में भारत का स्वर्ण आयात तीव्रता से बढ़ा, यद्यपि भौतिक मात्रा कम रही, क्योंकि वैश्विक स्वर्ण कीमतों में तीव्र वृद्धि हुई।
- मुख्य अवलोकन:**
 - वित्त वर्ष 2026 में स्वर्ण आयात मूल्य लगभग 25% बढ़ा।
 - भौतिक आयात घटा, किंतु वैश्विक स्तर पर कीमतें 40% से अधिक बढ़ीं, जिससे आयात बिल फुला।
- यह दर्शाता है कि वस्तु मूल्य आघात, उपभोग में वृद्धि न होने पर भी, भारत के भुगतान संतुलन को प्रभावित कर सकते हैं।
- अत्यधिक स्वर्ण आयात वैश्विक अनिश्चितता के समय एक सामूहिक आर्थिक चुनौती बन जाता है क्योंकि यह चालू खाता घाटा (CAD) बढ़ाता है; विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव डालता है; रुपये का अवमूल्यन करता है; आयातित मुद्रास्फीति बढ़ाता है; और बाह्य क्षेत्र की संवेदनशीलता को और गंभीर करता है।

Surging value of gold imports

	IMPORTS (\$BN)	QUANTITY (TONNES)
FY26	71.97	721.04
FY25	58.00	757.09
FY24	45.54	795.32
FY23	35.01	678.30
FY22	46.16	879.04

SOURCE: COMMERCE AND INDUSTRY MINISTRY

Gold import in FY26 had jumped by nearly 25% to **\$71.97 billion**. REUTERS

भारत की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

- चालू खाता घाटे (CAD) पर दबाव:** स्वर्ण एक प्रमुख गैर-आवश्यक आयात वस्तु है।
 - बढ़ते आयात व्यापार घाटे में वृद्धि करते हैं, विशेषकर जब तेल की कीमतें भी एक साथ ऊँची हों।
 - उच्च CAD विदेशी पूँजी प्रवाह पर निर्भरता को बढ़ाता है।
- विदेशी मुद्रा भंडार पर तनाव:** अधिक आयात भुगतान के लिए डॉलर का बड़ा बहिर्वाह आवश्यक होता है।
 - यह भारतीय रिज़र्व बैंक की बाहरी आगहत्तों के समय रुपये को स्थिर रखने की क्षमता को कम करता है।
 - आरबीआई के आँकड़ों और सरकारी आकलनों के अनुसार, पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार बनाए रखना आयात कवरेज, विनिमय दर स्थिरता एवं निवेशक विश्वास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- रुपये का अवमूल्यन:** स्वर्ण और कच्चे तेल आयात हेतु बड़े पैमाने पर डॉलर की माँग रुपये को कमजोर करती है।
 - अवमूल्यित रुपया आयात लागत को और बढ़ा देता है, जिससे मुद्रास्फीति का दुष्चक्र उत्पन्न होता है।
- मुद्रास्फीति का दबाव:** स्वर्ण और तेल की बढ़ती कीमतें आयातित मुद्रास्फीति को बढ़ाती हैं।
 - यह भारतीय रिज़र्व बैंक के लिए मौद्रिक नीति प्रबंधन को जटिल बना देता है।

भारत-यूईई CEPA और स्वर्ण आयात

- भारत और संयुक्त अरब अमीरात ने फरवरी 2022 में व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (CEPA) पर हस्ताक्षर किए, ताकि द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को सुदृढ़ किया जा सके।
 - किंतु इस समझौते के कुछ शुल्क रियायतों ने अनजाने में बुलियन (परिष्कृत स्वर्ण) आयात को बढ़ा दिया।
- समझौते ने बुलियन और डोरे (अर्ध-शुद्ध स्वर्ण मिश्रधातु) के बीच अपेक्षित शुल्क अंतर को उलट दिया।
 - परिणामस्वरूप भारत घरेलू परिष्करण के बजाय अधिक परिष्कृत स्वर्ण आयात करने लगा।
- आईआईएम अहमदाबाद के एक कार्यपत्र ने रेखांकित किया कि CEPA की शुल्क संरचना ने बुलियन आयात को डोरे की तुलना में अधिक आकर्षक बना दिया, जिससे घरेलू परिष्करण और मूल्य संवर्धन के अवसर घटे।

भारत का कमजोर स्वर्ण परिष्करण तंत्र

- भारत विश्व का सबसे बड़ा स्वर्ण उपभोक्ता होने के बावजूद वैश्विक स्वर्ण परिष्करण और व्यापार केंद्र के रूप में उभर नहीं पाया है।
- स्विट्जरलैंड और यूईई जैसे देशों ने नगण्य घरेलू उत्पादन के बावजूद सुदृढ़ परिष्करण तंत्र विकसित किया है।
 - उन्होंने विश्वस्तरीय परिष्करण अवसंरचना, LBMA-मान्यता प्राप्त रिफाइनरी और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं से एकीकरण विकसित किया।
 - परिष्करण लगभग 40% मूल्य संवर्धन उत्पन्न करता है, जिससे निर्यात के माध्यम से व्यापार घाटे की भरपाई होती है।

भारत के लिए चुनौतियाँ

- **LBMA-मान्यता प्राप्त रिफाइनरी का अभाव:** भारत में वर्तमान में वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त LBMA-प्रमाणित रिफाइनरी नहीं हैं, जिससे अंतर्राष्ट्रीय बुलियन बाजारों तक पहुँच सीमित हो जाती है।
- **अव्यवस्थित क्षमता:** वर्तमान रिफाइनरी नीतिगत और संरचनात्मक समस्याओं के कारण अपनी संभावित क्षमता से कम पर संचालित होती हैं।

- **सीमित वैश्विक एकीकरण:** भारत मुख्यतः एक अंतिम उपभोक्ता बना हुआ है, न कि वैश्विक स्वर्ण आपूर्ति श्रृंखलाओं में मूल्य संवर्धन करने वाला सहभागी।
- **आयात संरचना पक्षपात:** आयात तंत्र घरेलू प्रसंस्करण की तुलना में परिष्कृत बुलियन आयात को अधिक प्राथमिकता देता है।

सरकारी उपाय एवं नीतिगत सुझाव

- **लघु अवधि के उपाय:**
 - **माँग प्रबंधन:** गैर-आवश्यक स्वर्ण खरीद को हतोत्साहित करना और वित्तीय बचत साधनों को प्रोत्साहित करना।
 - **आयात नियंत्रण:** उच्च आयात शुल्क, स्वर्ण मुद्रीकरण योजनाएँ और सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड (SGBs) का उपयोग।
- **दीर्घकालिक संरचनात्मक सुधार:**
 - **परिष्करण तंत्र का विकास:** LBMA-मान्यता प्राप्त रिफाइनरी स्थापित करना और घरेलू मूल्य संवर्धन को प्रोत्साहित करना।
 - **स्वर्ण पुनर्चक्रण को बढ़ावा देना:** भारत में घरेलू स्तर पर बड़ी मात्रा में निष्क्रिय स्वर्ण भंडार उपस्थित है।
 - **वित्तीय विकल्पों का विस्तार:** SGBs, गोल्ड ETFs और डिजिटल गोल्ड को प्रोत्साहित करना।
 - **CEPA शुल्क संरचना की समीक्षा:** सुनिश्चित करना कि व्यापार समझौते घरेलू विनिर्माण और परिष्करण का समर्थन करें।
 - **बाह्य क्षेत्र की लचीलापन को सुदृढ़ करना:** निर्यात का विविधीकरण, तेल पर निर्भरता कम करना और विदेशी मुद्रा प्रबंधन में सुधार।

Source: IE

संक्षिप्त समाचार

सरदार वल्लभभाई पटेल

समाचार में

- हाल ही में प्रधानमंत्री ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण की 75वीं वर्षगांठ समारोह के दौरान सरदार वल्लभभाई पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित की।

सरदार वल्लभभाई पटेल

- उन्हें “भारत के लौह पुरुष” के रूप में जाना जाता है और वे भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता थे।
- **प्रारंभिक जीवन:** उनका जन्म 31 अक्टूबर 1875 को नडियाद में हुआ। उन्होंने इंग्लैंड में कानून की पढ़ाई की, बैरिस्टर बने और बाद में भारत में सफल वकालत शुरू की।
- **स्वतंत्रता संग्राम में योगदान:** महात्मा गांधी से प्रेरित होकर वे स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े।
 - उन्होंने खेड़ा सत्याग्रह (1918) और बारडोली सत्याग्रह (1928) जैसे आंदोलनों का नेतृत्व किया।
 - उनके नेतृत्व ने उन्हें “सरदार” की उपाधि दिलाई।
 - वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ नेता थे और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।
- **स्वतंत्रता के पश्चात भूमिका:** 1947 में स्वतंत्रता के बाद वे भारत के प्रथम उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री बने।
 - उनका सबसे बड़ा योगदान 560 से अधिक रियासतों का भारतीय संघ में विलय था।
 - उन्होंने भारत की प्रशासनिक प्रणाली के निर्माण और राष्ट्रीय एकता व सुरक्षा बनाए रखने में योगदान दिया।
- **मृत्यु और विरासत:** उनका निधन 15 दिसंबर 1950 को हुआ।
 - उनकी विरासत स्टैच्यू ऑफ यूनिटी जैसे स्मारकों के माध्यम से जीवित है, जो विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है।
 - उन्हें शक्ति, एकता और राष्ट्र के प्रति समर्पण के प्रतीक के रूप में याद किया जाता है।

स्रोत: DD

त्वरित न्याय एक ‘मानव अधिकार’

संदर्भ

- भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने उत्तर प्रदेश में लगभग 35 वर्षों से लंबित एक आपराधिक मामले की सुनवाई करते हुए कहा कि त्वरित न्याय का अधिकार न केवल अनुच्छेद 21 के अंतर्गत संवैधानिक गारंटी है, बल्कि यह एक मानव अधिकार भी है।

संविधान का अनुच्छेद 21

- अनुच्छेद 21 जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा की गारंटी देता है, सिवाय विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अनुसार।
- न्यायिक व्याख्या ने अनुच्छेद 21 का विस्तार करते हुए इसमें निष्पक्ष न्याय, विधिक सहायता, मानवीय कारावास स्थितियाँ और त्वरित न्याय को शामिल किया है।

न्यायिक विकास

- **हुसैनारा खातून बनाम बिहार राज्य:** सर्वोच्च न्यायालय ने प्रथम बार त्वरित न्याय को अनुच्छेद 21 के अंतर्गत मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी। इस मामले ने वर्षों से जेलों में बंद विचाराधीन कैदियों की दुर्दशा को उजागर किया।
- **ए.आर. अंतुले बनाम आर.एस. नायक:** न्यायालय ने त्वरित न्याय के अधिकार के उल्लंघन को निर्धारित करने के सिद्धांत स्थापित किए। इसमें स्पष्ट किया गया कि प्रणालीगत कमियों से उत्पन्न विलंब भी संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन है।

स्रोत: TH

PCOS का नया नाम – PMOS

संदर्भ

- वैश्विक चिकित्सीय सहमति के बाद पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (PCOS) का नाम बदलकर पॉलीएंडोक्राइन मेटाबॉलिक ओवरीयन सिंड्रोम (PMOS) कर दिया गया है। यह निर्णय लगभग 14 वर्षों तक डॉक्टरों, शोधकर्ताओं और रोगी समूहों के परामर्श के बाद लिया गया।

PMOS क्या है?

- PMOS, जिसे पहले PCOS कहा जाता था, प्रजनन आयु की महिलाओं को प्रभावित करने वाला एक जटिल हार्मोनल और चयापचय संबंधी विकार है।

- यह अंतःस्त्रावी तंत्र, चयापचय, प्रजनन स्वास्थ्य और मानसिक कल्याण को प्रभावित करता है।
- यह विकार विश्वभर में लगभग आठ में से एक महिला को प्रभावित करता है और बांझपन तथा मासिक धर्म अनियमितताओं के प्रमुख कारणों में से एक है।

PMOS के लक्षण

- **मधुमेह का जोखिम:** इंसुलिन प्रतिरोध टाइप-2 डायबिटीज मेलिटस का कारण बन सकता है।
- **हृदय संबंधी जोखिम:** PMOS वाली महिलाएँ उच्च रक्तचाप और हृदय रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं।
- **प्रजनन चुनौतियाँ:** यह विकार अंडोत्सर्जन और प्रजनन स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।
- **मानसिक स्वास्थ्य चिंताएँ:** दीर्घकालिक तनाव, शारीरिक छवि संबंधी समस्याएँ और हार्मोनल असंतुलन मनोवैज्ञानिक विकारों में योगदान कर सकते हैं।

PCOS का नाम क्यों बदला गया?

- पूर्व नाम पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम वैज्ञानिक रूप से गलत और भ्रामक माना गया, क्योंकि कई महिलाओं में वास्तव में अंडाशय में सिस्ट विकसित नहीं होते।
- पूर्व नाम ने विकार को मुख्यतः प्रजनन अंगों से जोड़ा, जबकि यह स्थिति चयापचय, हार्मोन, हृदय स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य को भी गंभीर रूप से प्रभावित करती है।

स्रोत: ET

डीआरडीओ द्वारा हैदराबाद में दीर्घकालीन स्क्रेमजेट कम्बस्टर परीक्षण

संदर्भ

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) ने हैदराबाद में सक्रिय रूप से शीत किया जाने वाला पूर्ण-पैमाना स्क्रेमजेट कम्बस्टर का सफलतापूर्वक दीर्घकालीन परीक्षण किया।

परिचय

- परीक्षण स्क्रेमजेट कनेक्ट पाइप परीक्षण (SCPT) सुविधा में किया गया।
- इसमें 1,200 सेकंड से अधिक का सतत रनटाइम हासिल किया गया, जो जनवरी 2026 में किए गए 700 सेकंड के परीक्षण से बेहतर है।

स्क्रेमजेट इंजन क्या है?

- स्क्रेमजेट (सुपरसोनिक दहन रैमजेट) एक उन्नत एयर-ब्रीदिंग प्रणोदन प्रणाली है, जिसे हाइपरसोनिक गति के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- यह उच्च गति से आने वाली वायु को संपीड़ित करता है और सुपरसोनिक वायु प्रवाह में ईंधन दहन की अनुमति देता है।
- यह दहन के लिए वातावरण में उपस्थित ऑक्सीजन का उपयोग करता है।

उपलब्धि का महत्व

- सफल परीक्षण भारत की स्वदेशी हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइल विकसित करने की क्षमता को सुदृढ़ करता है।
- यह उन्नत एयरोस्पेस और आगामी पीढ़ी की रक्षा प्रौद्योगिकियों में प्रगति को दर्शाता है।

हाइपरसोनिक प्रौद्योगिकी क्या है?

- हाइपरसोनिक प्रौद्योगिकी उन प्रणालियों को संदर्भित करती है जो मैक 5 (ध्वनि की गति से पाँच गुना अधिक) से अधिक गति से यात्रा कर सकती हैं।
- हाइपरसोनिक हथियार अत्यधिक उच्च गति से यात्रा कर सकते हैं और उड़ान के दौरान संचालन क्षमता बनाए रखते हैं, जिससे उन्हें पहचानना एवं रोकना कठिन हो जाता है।
- हाइपरसोनिक हथियारों के प्रकार
 - **हाइपरसोनिक ग्लाइड वाहन (HGVs):** इन्हें रॉकेट से प्रक्षेपित किया जाता है और ये लक्ष्य की ओर हाइपरसोनिक गति से ग्लाइड करते हैं।
 - **हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइलें (HCMs):** ये स्क्रेमजेट जैसे उन्नत एयर-ब्रीदिंग इंजनों द्वारा पूरी उड़ान के दौरान संचालित होती हैं।

स्रोत: AIR

प्रधानमंत्री स्कूल्स फॉर राइजिंग इंडिया (PM SHRI)

संदर्भ

- केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने पश्चिम बंगाल, केरल और तमिलनाडु को प्रधानमंत्री स्कूल्स फॉर राइजिंग इंडिया (PM SHRI) योजना के लंबित क्रियान्वयन के संबंध में नया अनुस्मारक जारी किया है।

पीएम श्री योजना

- उद्देश्य:** वर्तमान सरकारी स्कूलों को आदर्श विद्यालय में परिवर्तित करना।
 - यह योजना देशभर में केंद्र, राज्य और स्थानीय सरकारों द्वारा संचालित प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों के लिए है।
- वित्तपोषण:** यह एक केंद्रीय प्रायोजित योजना है, जिसकी कुल परियोजना लागत ₹27,360 करोड़ है (2022-23 से 2026-27 तक पाँच वर्षों के लिए)।
- इसका लक्ष्य देशभर में लगभग 14,500 स्कूलों का रूपांतरण करना है।
- ये विद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सभी घटकों को प्रदर्शित करेंगे, आदर्श विद्यालय के रूप में कार्य करेंगे और अपने आसपास के अन्य विद्यालयों को मार्गदर्शन देंगे।
- एक स्कूल गुणवत्ता मूल्यांकन ढाँचा विकसित किया जा रहा है ताकि इन विद्यालयों की प्रगति और प्रदर्शन को मापा जा सके।

प्रमुख विशेषताएँ

- ग्रीन स्कूलों का विकास:** इनमें सौर पैनल, एलईडी लाइटें, पोषण उद्यान, अपशिष्ट प्रबंधन, जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन प्रणाली होंगी।
- आधुनिक सुविधाएँ:** विद्यालयों में ICT सुविधाएँ, स्मार्ट क्लासरूम, पुस्तकालय, डिजिटल पुस्तकालय, विज्ञान प्रयोगशालाएँ और व्यावसायिक प्रयोगशालाएँ शामिल होंगी।
 - विद्यालयों को विज्ञान और गणित किट तथा पुस्तकालय या खेलों के लिए वार्षिक अनुदान भी मिलेगा।

- मातृभाषा और स्थानीय भाषाओं को प्रोत्साहित किया जाएगा।

स्रोत: TH

मलेरिया वैक्सीन पर अध्ययन

समाचार में

- लैंसेट में प्रकाशित एक प्रमुख अध्ययन में पाया गया कि विश्व की प्रथम स्वीकृत मलेरिया वैक्सीन, RTS,S/AS01E, ने अफ्रीका के कुछ हिस्सों में बच्चों की कुल मृत्यु दर को 13% तक कम किया।

मलेरिया

- यह एक गंभीर, जीवन-घातक रोग है जो परजीवियों द्वारा होता है और मुख्यतः संक्रमित मादा एनोफिलीज मच्छर के काटने से फैलता है।
- यह उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सामान्य है और सीधे व्यक्ति से व्यक्ति में नहीं फैलता, यद्यपि संक्रमित रक्त या सुई के माध्यम से दुर्लभ मामलों में फैल सकता है।

लक्षण

- संक्रमण के लगभग 10–15 दिन बाद मलेरिया सामान्यतः बुखार, सिरदर्द और ठंड लगने से शुरू होता है।
- प्रारंभिक लक्षण हल्के हो सकते हैं, इसलिए परीक्षण आवश्यक है।
- यदि यह गंभीर हो जाए तो भ्रम, दौरा, सांस लेने में कठिनाई, पीलिया, रक्तस्राव और गहरा मूत्र हो सकता है, जो जीवन के लिए खतरा बन सकता है।

रोकथाम और उपचार

- मलेरिया को मच्छरों के काटने से बचकर रोका जा सकता है—जैसे जाल, रिपेलेंट, कॉइल, स्क्रीन और सुरक्षात्मक कपड़े का उपयोग करके।
- उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में यात्रा करते समय रोकथाम हेतु दवाएँ लेना आवश्यक है।
- प्रारंभिक परीक्षण और उपचार अत्यंत आवश्यक है।
- उपचार परजीवी के प्रकार और रोगी की स्थिति पर निर्भर करता है।

- पी. फाल्सीपेरम के लिए आर्टेमिसिनिन-आधारित संयोजन चिकित्सा (ACTs)।
- पी. विवाक्स के लिए क्लोरोक्वीन (जहाँ प्रभावी हो)।
- पुनरावृत्ति रोकने हेतु प्राइमाक्वीन।

भारत-विशिष्ट आँकड़े

- 2015 से 2023 के बीच भारत में मलेरिया के मामलों और मृत्युओं में तीव्र कमी आई:
 - मामलों में 80.5% की कमी
 - मृत्युओं में 78.3% की कमी
 - 122 से अधिक जिलों ने शून्य मलेरिया मामले दर्ज किए
- भारत 2024 में WHO के उच्च भार से उच्च प्रभाव की ओर समूह से बाहर हो गया।
- **लक्ष्य:** 2027 तक शून्य स्वदेशी मलेरिया मामले और मौतें, तथा 2030 तक पूर्ण मलेरिया उन्मूलन।

सुझाव

- विशेषज्ञों ने बल दिया कि निरंतर निगरानी, मच्छर नियंत्रण और सुदृढ़ सार्वजनिक स्वास्थ्य उपाय प्रगति बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।

स्रोत: IE

पुरस्कार के बारे में

- यह पुरस्कार फ्लोरेंस नाइटिंगेल के नाम पर है, जिन्हें आधुनिक नर्सिंग की संस्थापक माना जाता है।
- इसे 1973 में भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा स्थापित किया गया।
- यह उन नर्सों और नर्सिंग पेशेवरों की उत्कृष्ट सेवाओं को मान्यता देता है जिन्होंने समाज में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- कुल 15 पुरस्कार दिए जाते हैं, जिनकी श्रेणियाँ हैं:
 - पंजीकृत सहायक नर्स एवं दाई
 - पंजीकृत नर्स एवं दाई
 - पंजीकृत महिला आगंतुक
- पात्र प्राप्तकर्ताओं में केंद्रीय/राज्य सरकारों, केंद्र शासित प्रदेशों और स्वैच्छिक संगठनों में कार्यरत नर्सिंग कर्मी शामिल हैं, चाहे वे अस्पतालों, सामुदायिक क्षेत्रों, शैक्षणिक संस्थानों या प्रशासन में कार्यरत हों।
- प्रत्येक पुरस्कार में प्रशस्ति पत्र, ₹1,00,000/- की नकद राशि और एक पदक शामिल होता है।

स्रोत: AIR



राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगेल पुरस्कार

2026

संदर्भ

- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में नर्सों को राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगेल पुरस्कार 2026 प्रदान किए।